International Journal of Sanskrit Research 2018; 4(1): 75-79

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2018; 4(1): 75-79
© 2018 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 14-11-2017
Accepted: 15-12-2017

ऋचा
संस्कृत विभाग, दिल्ली
विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

Correspondence
ऋचा
संस्कृत विभाग, दिल्ली
विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

पद्मसुन्दरगणिकृत अकबरसाहिश्रृंगारदर्पणम् एक अध्ययन

ऋचा

प्रस्तावना

अकबर द्वारा कराए गए संस्कृत ग्रन्थों के फारसी अनुवादों की सूची और उनकी संख्या से जहाँ संस्कृत– साहित्य की लोकोपयोगिता, महत्व एवं सामान्य जन हेतु इनकी आवश्यकता परक अकबर के दृष्टिकोण का परिचय प्राप्त होता है वहीं उसके द्वारा लिखवाए गए संस्कृत –साहित्य के विविध विधाओं से सम्बन्धित नवीन ग्रन्थों के अनुशीलन से अकबर का हार्दिक संस्कृत प्रेम , श्रद्धा और संस्कृत साहित्य के प्रति उसकी पवित्र आस्था का निदर्शन प्राप्त होता है। ग्रन्थ–निर्माण के इस स्वर्णिम क्रम में भी मुग़ल–सम्राट् अकबर के वैयक्तिक संस्कृत–प्रेम के कारण जिन संस्कृत ग्रन्थ– रत्नों का निर्माण संभव हो सका, उनमें विवेच्य ग्रन्थ का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। अकबर की ही राज्य सभा में वर्तमान तत्कालीन प्रख्यात जैन– पण्डित, उद्भट संस्कृत विद्वान् एवं ग्रन्थकार पद्मसुन्दर गणि ने अकबर की प्रसन्नता के निमित इस आलंकारिक (काव्य शास्त्रीय) ग्रन्थ की रचना की और यह ग्रन्थ अकबर को समर्पित करते हुए इसका अभिधान स्वयं सम्राट् अकबर के नाम पर 'अकबरसाहिश्रृंगारदर्पणम्' के रूप में स्थिर किया।

अकबर का साहित्य–प्रेम एवं साहित्यिक अभिरूचियाँ

धर्म–दर्शन एवं अध्यात्म– साहित्य के साथ साथ अन्यान्य कई विषयों एवं विद्याओं में भी अकबर की वैसी ही रूचि एवं वैसी ही श्रद्धा थी यह बात अकबर के जानकारों से छिपी नहीं है। ललित–कलाओं में संगीत (गायन एवं वादन), स्थापत्य (भवन–मण्डप–चैत्य– प्रासाद– गुम्बद–मस्जिद–किले–दरवाजे) एवं चित्रकला आदि में तो वह अपने युग का एकाकी उदाहरण था और एक नवीन युग का प्रवर्तक भी। संगीत एवं कला की तरह ही अकबर; साहित्य से भी उसी प्रमकार जुड़ा था और यह तथ्य छिपा नहीं हैं कि वह अपने समूचे जीवन, साहित्य एवं साहित्यकारों से घिरा रहता था। पीछे हमने अकबरी दरबार में स्थायी रूप से वृत्ति पाने वाले, आंशिक रूपा से राजकीय संरक्षण पाने वाले एवं एवं विविध अवसरों पर शासकीय पुरस्कार, मान–सम्मान आदि प्राप्त करने वाले संस्कृत सेवियों की एक बहुत विस्तृत परिचर्चा प्रस्तुत की है जिससे अकबर की साहित्यिक अभिरूचियों का आकलन सहज ही किया जा सकता है।

अकबर की साहित्यिक अभिरूचियों का निदर्शन उसके द्वारा कराए गए अनुवाद–ग्रन्थों से भी उपलब्ध हो जाता है। इस क्रम में हम देखते हैं कि विविध प्रकार के धार्मिक एवं ऐतिहासिक ग्रन्थों के फारसी अनुवाद कराते समय ही अकबर ने अपनी रूचि के कारण ही विविध भाषाओं में उपलब्ध कथा–ग्रन्थों का भी फारसी अनुवाद कराया था। ऐसे ग्रन्थों में 'किस्सा अबू हम्जा' विशेष रूप से उल्लेखनीय है और मुल्ला बदायूँनी के साक्ष्यों से यह प्रकट है कि यह अनूदित ग्रन्थ; बड़े–बड़े 17 जिल्दों में समाप्त हुआ था। इसी प्रकार संस्कृत कथा–साहित्य की महत्वपूर्ण कृतियों के 'कथासरित्सागर' 'सिंहासनद्वात्रिंशिका' एवं 'पंचतंत्र' के फारसी अनुवाद भी अकबर की साहित्यिक अभिरूचियों के अच्छे प्रस्तोता हैं। समूचे संस्कृत साहित्य के अन्तर्गत सरस शैङ्गारिक रचनाओं में जि दो प्रणय–कथाओं का नाम सबसे अधिक लिया जाता हैं उनमें 'आभिज्ञानशाकुन्तलम्' एवं 'नल दमयन्ती–कथा' स्मरणीय हैं। दुर्भग्य से अकबर ही नहीं समूचे अकबरी दरबार के किसी भी साहित्यकार, लेखक, अनुवादक, विद्वान् अथवा कवि की दृष्टि ''शाकुन्तलम्' नाटक पर पर ही नहीं पड़ी (यह बहुत ही आश्चर्य की बात है) फलतः शाकुन्तलम् का अनुवाद तो प्रस्तुत न हो सका किन्तु अकबर ने 'नल–दमयन्ती कथा' का फारसी में पद्यानुवाद अवश्य कराया जिससे अकबर की साहित्यिक अभिरूचियाँ प्रकट होती हैं।

अकबरसाहिश्रृंगारदर्पण की रचना का मूल कारण अकबर की इन्हीं साहित्यिक अभिरूचियों में निहित है जिसे उसके दरवारी विद्वान् एवं मित्र, प्रख्यात जैन आचार्य, पण्डित पद्मसुन्दर गणि ने अच्छी तरह से अनुभूत कर लिया था और उचित समय पर अकबर की प्रसन्नता एवं उसके मनोविनोद हेतु एक उत्कृष्ट साहित्य–शास्त्रीय ग्रन्थ की रचना कर उसे समर्पित किया।

अकबरसाहिशृंगारदर्पणम् के प्रणयन की आवश्यकता

यहाँ यह ध्यान रखने योग्य तथ्य है कि यद्यपि इस ग्रन्थ को उपलब्ध हुए एक सदी एवं प्रकाशित हुए आधी सदी से अधिक समय बीत चुका है और लगभग इतने ही समय से इस ग्रन्थ का उपयोग भी किया जा रहा है। विविध शोधी विद्वानों ने इसकी प्रकृति, काल, रचनाकार आद से संबन्धित विवरणों को भी अपने शोध का विषय बनाया और संबद्ध निर्णय प्रस्तुत किये किन्तु आज तक यह निर्विवाद रूप से नहीं जाना जा सका कि अकबर के लिए प्रणीत इस विशुद्ध साहित्य–शास्त्रीय ग्रन्थ का रचना–प्रयोजन क्या था। विवादित किन्तु तार्किक, युक्तियुक्त एवं कालोचित एकमात्र प्रयोजन जो पिछली शती से विद्वानों के मध्य प्रचलित रहा है उसे प्राच्य–विद्याओं के विलक्षण अध्येता एवं अन्वेष्ट डॉ. एस. आर. भण्डारकर ने ही प्रतिपादित किया था और आज भी यही एक प्रयोजन इस ग्रन्थ का स्वीकार भी किया जाता है कि–युवावस्था में अकबर ने उपनी रूठी हुई पत्नी (मुद्रावती) के मनोविनोदन हेतु अपने कवि–मित्र एवं प्रख्यात जैन–आचार्य पद्मसुन्दर गणि से इस ग्रन्थ का प्रणयन कराया। भण्डारकर ने इस प्रयोजन की पुष्टि में जो तर्क रखे हैं वे एकदम से खरिज नहीं किये जा सकते, दूसरे जब किसी अन्य प्रयोजन का ज्ञान ही न हो तो ऐसे किसी अध्येता के विचार पर प्रश्न या शंका उचित नहीं जान पड़ता अतः प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक ने भी भण्डारकार के ही विचारों को सम्मान देते हुए इस पुस्तक में स्थान दिया है। इसका विस्तृत विवरण अगले पृष्ठों पर इसी ग्रन्थ के काल–निरूपण के क्रम में दिया गया है।

भण्डारकर के उपर्युक्त प्रयोजन के साथ–साथ संस्कृत–साहित्यशास्त्र के विविध पक्षों, नायक–नायिका विवेचन, रस–गुण–अलंकार आदि काव्यशास्त्रीय विन्दुओं का अकबर के लिये ज्ञान भी इस प्रसंग में प्रस्तुत ग्रन्थ का रचना–प्रयोजन माना जा सकता है।

ग्रन्थ के रचयिता

इस ग्रन्थ के रचयिता निर्विवाद रूप से नागौरी तपागच्छा के प्रख्यात जैन आचार्य पद्मसुन्दर गणि हैं और 'अनूप संस्कृत लायब्रेरी, बीकानेर में उपलब्ध इसकी पाण्डुलिपि में ग्रन्थकार के रूप में स्पष्ट रूप से अन्हीं का निर्देश किया गया है। पद्मसुन्दर गणि ने अपनी इस कृति का उल्लेख अपनी अन्य कृतियों में भी किया है अतः यह निर्विवाद है कि लेखक पद्मसुन्दर गणि ही हैं। पद्मसुन्दर गणि

पद्मसुन्दर गणि के बारे में जैन धर्म के विश्वसनीय ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक साक्ष्यों एवं स्त्रोतों के आधर पर यह कहा जाता है कि श्वेताम्बर जैन थे और नागौरी–तपागच्छ के प्रसिद्ध भट्टारक यति थे। मोहनलाल दलीचन्द देशाई ने अपनी एक पुस्तक [1] में इनके साम्प्रदायिक–प्ररिचय को निम्नवत् प्रस्तुत किया है जो कि नागपुरीय– तपागच्छ की पट्टावली (एक प्रकार की ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक सामग्री) कें स्त्रोतों पर आधारित है–

'पद्मसुन्दन ने अपने एक ग्रन्थ 'सुन्दरप्रकाशशब्दार्णव– की पुष्पिका में स्वयं को नागपुरीय तपागच्छ को अनुयायी बताया है– (इति श्रीमन्नगपुरीयतपागच्छनभोगमि पण्डितोत्तम–श्रीपद्ममेरूशिष्यपण्डित–पद्मसुन्दरविरचिते.....) उपर्युक्त ग्रन्थ की हस्तलिखित प्रति के आधार पर नाथूराम प्रमी जी ने भी इन्हें इसी सम्प्रदाय का भट्टारक यति स्वीकार किया है।[2] उपर्युक्त साक्ष्य से यह प्रमाणित है कि पद्मसुन्दर गणि नागपुरीय तपागच्छ संप्रदाय के भट्टारक यति थे और मुगल बादशद अकबर के साथ उनके मैत्री पूर्ण सम्बन्ध थे। अकबर के साथ उपर्युक्त सम्बन्ध एवं उसकी सभा में किसी पण्डित को शास्त्रार्थ में पराजित कर बादशाह से प्रभूत उपहार प्राप्त करने की इस घटना का उल्लेख अन्य साक्ष्यों में भी उपलब्ध होता है, यथा स्वयं उनकी परम्परा के परवर्ती भट्टारक यति हर्षकीर्ति सूरि की 'धतुतरंगिणी' से ज्ञात होता है कि उन्होंने बादशाह अकबर की सभा में किसी महापण्डित को पराजित किया था जिसके सम्मानस्वरूप उन्हें बादशाह अकबर की ओर से रेशमी–वस्त्र, पालकी और ग्राम आदि भेंट स्वरूप प्राप्त हुए थे। वे स्वयं जोधपुर के हिन्दू नरेश मालदेव द्वारा भी सम्मानित थे, हर्षकीर्ति सूरि का यह उल्लेख; नाथूराम प्रेमी की पुस्तक में,–निम्नवत् है[3]

साहेः संसदि पद्मसुन्दरगणिर्जित्वा महापण्डितं
क्षौमग्रामसुखासनाकबरश्रीसाहितो लब्धवान्।
हिन्दूकाधिपमालदेवनृपतेर्मान्यो वदान्योऽधिकं
श्रीमद्योधपुरे सुरेप्सितवचः पद्माह्वयं पाठकम्।।

अन्य उपलब्ध साक्ष्यों से यह भी ज्ञात होता है कि पद्मसुन्दर गणि के गुरू पद्ममेरू एवं आनन्दमेरू को क्रमशः अकबर के पिता हुमायूँ एवं पितामह बाबर की राज्यसभा में सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्राप्त थी। इस घटना का उल्लेख स्वयं पद्मसुन्दर गणि द्वारा रचित 'अकबरशाहिशृंगारदर्पणम्' की एक मात्र पाण्डुलिपि जो अनूप संस्कृत लायब्रेरी, बीकानेर में सुरक्षित है तथा चन्द्रकीर्तिसूरि के शिष्य हर्षकीर्ति सूरि के लिए किसी 'वीर' नामक व्यक्ति ने लिखा था,– के अन्त में इसके लिपिकर्ता ने किया है[4]

मान्यो बाबरभूभृतोऽत्र जयराट् तद्वत् हुमायूं नृपो–
ऽत्यर्थं प्रीतमनाः सुमान्यमकरोदानन्दरायाभिधम्।
तद्वत्साहिशिरोमणेरकबर–क्ष्मापाल–चूडामणे–
र्मान्यः पण्डितपद्मसुन्दर इहाभूत् पण्डितव्रातजित्।।2।।

पद्मसुन्दर गणि का रचना–संसार बहुत विस्तृत तो नहीं है किन्तु जिस मात्रा एवं गुणवक्ता का साहित्य उपलब्ध है उनके विवेचन से ही अनेकानेक जैन–साहित्य के इतिहासविदों एवं संस्कृत–साहित्य समीक्षकों ने उन्हें एक प्रतिभासम्पन्न महाकवि, साहित्यशास्त्री एवं विलक्षण दार्शनिक की कोटी में स्थापित किया है। पद्मसुन्दर चातुर्दिक प्रतिभा से सम्पन्न तो थे ही विविध धर्म–दर्शनों का भी उन्हें विलक्षण ज्ञान था। वेयक्तिक जीवन में श्वेताम्बर यति होने के कारण उनके त्याग, तपस्या, नैतिक–जीवन आदि पर कुछ कहना व्यर्थ होगा। हाँ इतना अवश्य कहा जा सकता है कि ये ही वो गुण थे जिन पर स्वयं मुगल–सम्राट अकबर भी मुग्ध था और इस जैन–यति के समक्ष नतमस्तक रहता था। यूं अकबर से मिलने से पूर्व भी वे अनेकानेक राजा–महाराजाओं को अपने पाण्डित्य से अभिभूत कर चूके थे और उनसे संरक्षण प्राप्त कर चुके थे। पद्मसुन्दर ने साहित्य, नाटक, कोश, अलंकार, ज्योतिष और स्तोत्र विषयक अनेकानेक ग्रन्थों का प्रणयन किया था जिनमें प्रायः सभी रचनाएं उपलब्ध तो हैं किन्तु प्रकाशित नहीं। सर्वप्रथम इनकी रचनाओं को प्रकाश में लाने का श्रेय संस्कृत–साहित्य के महान् उद्धारक पी. पीटर्सन को है जिन्हों ने इनकी एक कृति 'रायमल्लाभ्युदय' पर विशेष विवरण प्रस्तुत किया था। पीटर्सन से पूर्व तक पद्मसुन्दर गणि पर कोई विशेष शोधपरक अथवा प्रकाशन परक कार्य नहीं के बराबर हुआ था। पीटर्सन के इस शोधपरक से प्राच्यविद्या के विद्वानों का ध्यान पद्मसुन्दर गणि की ओर उन्मुख हुआ। बाद में पण्डित नाथूराम प्रेमी[5] एवं प्रेमी जी के बाद स्वर्गीय अगरचन्द नाहटा[6] जी ने पद्मसुन्दर की कृतियों को साहित्य–संसार

[1] The short hisrory of Jaina literature, p.488 Footnote. See bhanu Chandra Gani Charifam, Introduction. Page- 12.

[2] विशेष विवरण हेतु देखिए 'जैन साहित्य और इतिहास, पृष्ठ–395.

[3] जैन साहित्य और इतिहास, पृष्ठ–395

[4] देखिए : 'अकबरशाहिश्रृंगारदर्पणम्' Introduction] page-20

[5] अनेकान्त,वर्ष–7, अंक–5, 1944 ई. में 'पण्डित पद्मसुन्दर और उनके दो ग्रन्थ' शीर्षक लेख द्वारा प्रेमी जी ने सर्वप्रथम इनकी कृतियों की ओर साहित्य समाज का ध्यान आकृष्ट किया।

[6] देखए :'उपाध्याय पद्मसुन्दर और उनके ग्रन्थ' शीर्षक नाहटा जी का लेख, जो कि 'अनेकान्तद्व वर्ष–4, अंक–8 तथा 'कवि पद्मसुन्दर और श्रावक रायमल्ल' शीर्षक नाहटा जी के लेख, जो कि अनेकान्त, वर्ष–10, अंक–1 में प्रकाशित हैं।

में स्थापित किया। इन विद्वानों के द्वारा अधुनापर्यन्त अन्विष्ट एवं प्रमाणित पद्मसुन्दर की कृतियां निम्नवत्[7]–

'रायमल्लाभ्युदयकाव्य, 'यदुसुन्दरमहाकाव्य, ' पार्श्वनाचरित, 'जम्बूचरित, 'राजप्रश्नीयनाट्यपदमंजिका, 'परमतव्यवच्छेदस्याद्वादशत्रिंशिका, 'प्रमाणसुन्दर, 'सारस्वतरूपमाला, 'सुन्दरप्रकाशशब्दार्णव, हायनसुन्दर, 'षड्भाषागर्भितनेमिस्तव, 'वरमंगलिकास्तोत्र, 'भारतीस्तोत्र, 'भविष्यदत्तचरित और 'ज्ञानचन्द्रोदय' नामक नाटक आदि।

वी. राघवन् ने देश विदेश में उपलब्ध पद्मसुन्दर गणि की कृतियों की बाबत अपनी सूची में नागपुरी तपागच्छ के अनुयायी पद्मसुन्दर गणि को पद्ममेरू का शिष्य बताया है और इनकी केवल दस कृतियों का परिचय प्रस्तुत किया है। राघवन् की सूची से इन ग्रन्थों की उपलब्धता के सूचना प्राप्त हो जाती है।[8]

पद्मसुन्दर ने रायमल्लभ्युदय, भविष्यदत्तचरित एवं पार्श्वनाथचरित; इन तीन ग्रन्थों को चौधरी रायमल्ल जी दिगम्बर सम्प्रदाय के श्रावक थे जबकि पद्मसुन्दर श्वेताम्बर सम्प्रदाय के यदि ।इन दोनों सम्प्रदायों के मध्य एक वैमनस्य सदियों से प्रवर्तित रहा है अतः पद्मसुन्दर द्वारा रायमल्ल के अनुरोध पर ग्रन्थ–प्रणयन पर समीक्षकों एवं आलोचाकों सहित इतिहासकारों सहित इतिहासकारों को भी आश्चर्य होता है। बहुधा इसके कारणों को ढूंढ़ने का प्रयत्यन नहीं के बराबर किया जाता है किन्तु साक्ष्यों से प्रमाणित होता है। कि यह मुगल–सम्राट् अकबर के सर्वधर्म–समभाव का ही परिणाम था। जिसने कुछ दिनों के लिए जैन ही नहीं परस्पर विरूद्ध प्रायः सभी धर्मों के बीच एक प्रकार की एकता स्थापित कर दी थी।

इस प्रकार पद्मसुन्दर ने अपने मित्र–स्थानीय मुगल–सम्राट् अकबर के आदेश पर और उनकी प्रसन्नता के निमित्त किन किन ग्रन्थों का प्रणयन किया यह हमें पूर्णतः ओर प्रमाणतः नहीं ज्ञात हो सका है किन्तु 'अकबरशाहिशृंगारदर्पण' की रचना उन्होंने अकबर के आदेश के आदेश और प्रसन्नता के लिए की, यह सर्वथा प्रमाणित है। इस ग्रन्थ का विस्तृत परिचय हम अगले पृष्ठों पर प्रस्तुत करेंगे। वैसे ऐतिहासिक संदर्भों द्वारा प्रकट पद्मसुन्दर को दिये गए उदार संरक्षण, प्रतिष्ठा एवं पुरस्कार आदि के आलोक में यह स्पष्ट है कि पद्मसुन्दर ने अकबर के प्रीत्यर्थ संस्कृत–सेवा परक अनेक कार्य किये होंगे।

हीरविजय सूरि

मुगल साम्राज्य को हिन्दू धर्म–दर्शन एवं संस्कृत–वाङ्मय के प्रति अत्यधिक उदार बनाने वाले जैन–आचार्यों में हीरविजय सूरि का नाम सर्वोपरि है। समकालीन एवं आधुनिक ऐतिहासिक ग्रन्थों में सम्राट् अकबर को जो धार्मिक रूप से उदारवान् एवं सर्वधर्मसमभाव के अनुयायी के रूप में प्रतिष्ठित किया जाता है; अकबर में इस धर्म–समन्वय की बीज–भावना निश्चय ही हीरविजय सूरि के द्वारा ही प्रतिष्ठित की गई थी।

यद्यपि हीरविजय सूरि एवं सम्राट् अकबर के पारस्परिक संबन्धों पर प्रचुर मात्रा में ऐतिहासिक, पुरातात्विक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक साक्ष्य उपलब्ध हैं किन्तु इन सबके बावजूद यह अभी तक स्पष्ट रूप से नहीं कहा जा सका है कि हीरविजय सूरि प्रथम बार अकबर के संपर्क में किस वर्ष आए। इस प्रसंग में हम प्रामाणिक साक्ष्यों के अनुसार 1582 ई. को प्रस्तुत कर सकते हैं और यह प्रायः इतिहासविद् एवं जैन–धर्म के सांप्रदायिक साक्षयों के अनुसार सिद्ध भी है। किन्तु कालान्तर में महाराणा प्रताप द्वारा हीरविजय सूरि को लिखे गए एक पत्र[9] के उपलब्ध हो जाने से यह काल कुछ और भी पूर्व में आकर ठहर जाता है और हम यह देखते हैं कि सूरि जी का अकबरी रबार में प्रथम बार आगमन 1582 ई. में नहीं अपितु 1578 ईं में ही हो चुका होता है क्योंकि महाराणा प्रताप ने सूरि जी को संबोधित अपने पत्र में सूरि जी द्वारा अकबर को प्रतिबोधित कर सम्राट् से जीव–हिंसा निरोधक कार्यों की बड़ी प्रशंसा की है। महाराणा प्रताप के पत्र के आलोक में अकबर एवं हीरविजय सूरि के पारस्परिक मिलन की तिथि; अनुसंधान के धरातल पर विचारणीय है क्योंकि इसके विपरीत समकालीन ग्रन्थ, अभिलेख एवं अन्य ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक साक्ष्य यह भी बतालाते हैं कि हीरविजय सूरि और अकबर का प्रथम मिलन 1582 ई. में तब हुआ था ज बवह काबुल अभियान से वापस आ चुका था। किन्तु अन्य साक्ष्यों के आलोक में मैं इस काल को 1577–78 के रूप में स्वीकार करने का पक्षधर हूँ। हम जानते हैं कि विश्व धर्म–दर्शन सम्बन्धी जिज्ञासा अकबर के हृदय में इसी काल में प्रबल रूप में प्रस्तुत होती है ओर उसने फतहपुर सीकरी स्थित 'इबादतखनः में इसी समय से विश्व धर्म–दर्शन मे आचार्यों को आमन्त्रित करना प्रारम्भ कर दिया था जहाँ विविध धर्मों व दर्शनों के आचार्य दार्शनिक विचार–विमर्श में भाग लिया करते थे। धर्म दर्शन के विचार–विमर्श की इसी कालावधि में अकबर ने एक बाद हीरविजय सूरि के विषय में सुना था।

हेमविजय गणि जो कि अकबर के दरबार में उपस्थित विजयसेन सूरि का शिष्य था; ने 'विजयप्रस्तिमहाकाव्य' में इस विषय को विस्तार से निरूपित किया है और वह स्पष्ट रू‍प से कहता है कि– विविध धर्म–दर्शनों के बीच आदर्श धर्म–दर्शन की परीक्षा एवं पारमार्थिक जीवन–मूल्यों व शिक्षाओं की जिज्ञासा हेतु प्रवर्तित अपनी प्रार्थना–सभा में अकबर ने विविध आचार्यों के मत–वाद–सिद्धान्तों का श्रवण किया और अभीप्सित पारमार्थिक ज्ञान को न प्राप्त कर अन्यान्य दर्शन एवं धर्मों के आचार्यों को आमन्त्रित किया। इसी क्रम में अकबर ने हीरविजय सूरि के गुणों को सुनकर उन्हें दरबार में आमन्त्रित किया था। हेमविजय ने अकबरी दरबार में उपस्थित उस व्यक्ति का नाम भी बताया है जिसने पहली बार अकबर को 'हीरविजय सूरि' इस नाम से परिचय कराया ओर वह व्यक्ति है अतिमेत खान। हेमविजय द्वारा सूचित यह नाम या तो हिन्दी की वर्तनी में अस्पष्ट हो गया है या यह सूबा गुजरात में साम्राज्य का कोई सामान्य तथा अचर्चित अधिकारी है जिस पर समकालीन ग्रन्थों में कोई विशेष विवरण नहीं मिलता।

अस्तु, अतिमेत खान तथा दरबार के प्रतिष्ठित विद्या–व्यासनियों के मुख से हीरविजय सूरि के विषय में और भी लोकोत्तर विषेशताओं को सुनकर अकबर उनसे मिलने को लालायित हो अठा और उसने शीघ्र ही दो मेवरा (मेवराह)को शाही–फर्मान; जो कि गुजरात के सूबःदार शिहाबखान (शिहाबुद्दीन अहमद खान) के नाम संबोधित था

---

[7] डॉ. नेमिचन्द्र ज्योतिषाचार्य ने अपनी पुस्तक 'तीर्थंकर महावीर और उनकी आचार्य परंपरा, खण्ड–4, पृ.–83 में इनकी मात्र दो कृतियों का ही उल्लेख किया है–1. 'भविष्यदत्तचरित' और 'रायमल्लाभ्युदयमहाकाव्य' किन्तु नाथूराम प्रेमी ने अपनी पुस्तक, पृ.396–97 तथा डॉ. गुलाब चौधरी ने अपनी पुस्तक 'जैन साहित्य का बृहद् इतिहास' भाग–6,पृ.–67 में इनकी अन्य उपर्युक्त रचनाओं का उल्लेख किया है। विशेष विवरण के लिए इन ग्रन्थों की सहायता लेनी चाहिए।

[8] Catalogus Catalogorum, vol. 11, p.151

[9] 'श्रमण' वर्ष–5, अंक 1–6, जनवरी–जून2004ई. पृष्ठ 118–19 पर 'महाराणा प्रताप का एक पत्र सम्राट् अकबर–प्रतिबोधक जैनाचार्य श्रीनाचार्य श्रीहीरविजय सूरि के नाम' शीर्षक एक लघु आलेख में डॉ. सोहनला पाटनी ने इस पत्र गुजराती समाचार पत्र 'जय जिनेन्द्र' दिनांक 01.04.2003 से प्राप्त गुजराती से हिन्दी में अनूदित कर प्रकाशित कराया है। पाटनी के अनुसार भारत–गौरव प्रताप ने यह पत्र आश्विन, शुक्ल पंचमी 1635 वि. सं. (ई. सन् 1578) को लिखा था। पत्र का वह पहत्वपूर्ण अंश निम्नवत् है जिससे यह प्रमाणित होता है। कि इस वर्ष तक सूरि जी अकबरी दरबार की शोभा बढ़ा चुके थे और अकबर को प्रतिबोधित कर चुके थे–

'' अप्रंच (अपरंच) इन दिनों आपका पत्र नहीं आया सो कृपा कर लिखिएिगा। श्री बड़ा हुजूर (महाराणा उदय सिंह जी) के समय में आपका पधारना हुआ था, उस समय यहाँ से वापस पधारते समय जैनाबाद (फतेहपुर सीकरी) के बादशाह अकबर को ज्ञान का प्रतिबोध दिया जिसका चमत्कार बहुत महत्वपूर्ण बताया गया। जीवहिंसा, चिडकली तथा पक्षी–मात्र का शिकार बन्द करवाया जिसका बड़ा उपकार हुआ। इस तरह जैन धर्म में आप जैसे उद्योतकारी इस समय दूसरा कोई दिखाई नहीं देता।''

पत्र से स्पष्ट हे कि ई. सन् 1582 से पूर्व भी अकबर और सूरि जी का समागम हो चुका था।

और जिसमें गुजरात के जैन–संन्यासियों से हीरविजय सूरि का हवाला लेकर उन्हें अकबरी–दरबार तक प्रतिष्ठा के साथ ले आने का वृतान्त लिखा था,–के साथ विदा किया।
हेमविजय ने अकबर के द्वारा धर्म–दर्शन से सम्बन्धित पूछे गए प्रश्नों को संक्षेप में निन्मवत् प्रस्तुत किया है[10]

विशारदव्रातवृतस्य धर्मिणो गुरोः पुरःस्थः स्थिरदृक् स्थिरेश्वरः।
अपृच्छदच्छं परमात्मनः प्रभोः स्वरूपमास्तिक्यसमं सविस्तरम्।।
पुरातनाचार्यवरैर्निरूपितं न्यरूपि पूज्यैस्तदशेषमुत्तमम्।
पिबन् श्रुतिभ्यां तदतुष्यदुर्वरापतिश्च वीणाक्वणितं फणीव सः।।

अकबरसाहिशृंगारदर्पणम् की ग्रन्थ–प्रकृति एवं परिचय

अकबरसाहिशृंगारदर्पणम्; एक विशुद्ध अलंकारशास्त्रीय ग्रन्थ है जबकि नाट्य–शास्त्रीय विषयों की प्रधानता को देखकर बहुधा एतद्विषयक समीक्षक विद्वानों ने इस ग्रन्थ की तुलना 'दशरूपक' 'भावप्रकाशन' तथा 'नाट्यदर्पण' के साथ भी की है, जिससे इस ग्रन्थ की महत्ता का अनुमान सहज हरी किया जा सकता है। चार उल्लासों में विभक्त इस ग्रन्थ में कुल 345 पद्य हैं।
प्रथम उल्लास में पद्मसुन्दर ने प्रथम आठ पद्यों में अकबर सहित उसके पूर्वज; बाबर तथा हुमायूं की प्रशंसा की है। इसके बाद काव्य में रस की स्थिति, रस–संख्या, स्वरूप, स्थायी–व्यभिचारी तथा सात्विक भावों की संख्या, स्वरूप आदि का निरूपण किया है। रसों की पुष्टि या अभिव्यक्ति में सात्विक भावों की सत्ता को मानने वाले पद्मसुन्दर; दूसरे आचार्य हैं। इससे पूर्व धनिक–धनंजय ने सात्विक भावों की सत्ता स्वीकार की थी–

विभावैरनुभावैश्च सात्विकैर्व्यभिरिभिः।
आनीयामानं स्वाद्यत्वं स्थायिभावो रसः स्मृतः।।–(दशरूपक)
विभावैरनुभावै सात्विकैर्व्यभिचारिभिः।
आरोप्यमाण उत्कर्षः स्थायी भावो भवेद्रसः।।– (दर्पण–13)

रसों के स्वरूप प्रदर्शन के क्रम में शृंगाररस–स्वरूप, उसके भेद–प्रभेदों का सोदाहरण निरूपण, नायक–स्वरूप, सलक्षण एवं सोदाहरण नायकभेद, नर्मसचिव, पीठमर्द, विट, विदूषक आदि भ्रभेदों का निरूपण, नायिका स्वरूप, भेदोपभेद आदि का सोदाहरण विवरण यहाँ प्रस्तुत किया गया है। नायक स्वरूप, भेदोपभेद आदि का सोदाहरण विवरण यहाँ प्रस्तुत किया गया है। नायक के प्रचलित धीरोदात्त, धीरललित, धीरोद्धत तथा धीरशान्त भेदों का परित्याग कर अनुकूल–दक्षिण–शठ तथा धृष्ट नायक का वर्णन किय गया है। संभवतः काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ–निर्माण में ध्यान रखने के कारण ही ग्रन्थकार ने नाटकों में प्रयुक्त होने वाले नायक–भेदों का वर्णन नहीं किया है। हाँ नायक की योग्यताओं एवं गुणों के स्त्रोत पारंपरिक नाट्यशास्त्रीय ग्रन्थ ही हैं–

दाता विद्वन्कुलीनः किल सकलकलाम्भोधिपारं प्रयातः
श्रीमान्सभ्योऽभिमानी रतरसकुशलश्चातुरीचंचुरूच्चैः। ,
तारूण्यालंकृताः स्मितमधुरवचा भाग्यसौभाग्यभव्य–
स्तादृग्लीलावतीनां स्थिररूचिरूचिरो नायकः संमतः स्यात्।।
स नायकश्चतुर्धानुकूलः स्याद्दक्षिणः शठः।
धृष्टश्चेति क्रियायोगात्तेषां भेदः स्मृतो यथा।।

द्वितीय उल्लास से परकीया–नायिका के दो भेद बताकर पुनः परवधू द्वारा नायक के अनेक प्रकार के दर्शनों का जो अनुभव होता है, उसे प्रतिपादित किया गया है। यूँ तो समूचे ग्रन्थ में ही उदाहरणों को प्रस्तुत करते समय पद्मसुन्दर गणि ने अपनी विलक्षण प्रातिभा कवित्व–शवित्व–शक्ति का परिचय दिया है किन्तु नायिकाओं के वर्णन–क्रम में यह प्रतिभा जरा अधिक प्रखर हो जाती है। परकीया द्वारा प्रदेश–विशेष में अपने प्रिय को देखने पर कवि की वर्णन–चातुरी देखें–

सौधं सुन्दरि चन्द्रधामधवलं दीप्तप्रदीपोज्ज्वलं
गेयं कोकिलकाकलीसुमधुरं स्फारीभवन्मन्मथम्।
खण्डक्षोदसुधामधूममधुरः सीधुः स्फुटं निष्फलो
यद्यायाति गृहे न तेऽद्य सुभगः सौभाग्यशोभाचणः।।

अन्यदीय–कन्या–स्वरूप, मुग्धा–चेष्टा, उद्धतमन्मथा, दुःखसंस्था, पणाङ्गना आदि नायिकाओं की कोटि सहित स्वाधीनपतिका, उत्का, वासक–सज्जिका, अभिसन्धिता, विप्रलब्धा, खण्डिता, अभिसारिका व प्रोषितपतिका आदि नायिकाओं के क्रमागत आठ भेदों का सलक्षणोदाहण निरूपण किया गया है। इसी कम में उत्तम, मध्यम व अधम नायिकाओं का भी विवरण प्राप्य है। ग्रन्थकार ने यहाँ प्रोषितपतिका का बहुत ही प्रभावी चित्र खींचा है–

यस्या कृत्वावधिं भर्ता विदेशं कारणाद्गतः।
तदनागमसंतप्ता प्रोषितप्रेयसीति सा।।
काचित्पाण्डुर–गण्ड–मण्डल–लुलत्केशावली–संयमं
कृत्वाथ श्लथ–कंकण–च्युतिभयादुद्यम्य हस्तौ निजौ।
स्फार–द्वार–कपाट–लम्बिततनुर्दत्तेक्षणा तत्पथि
प्रायः प्रेम–भरालसा सुकृतिना सद्यः समाश्लिष्यते।।

तृतीय उल्लास में विप्रलम्भ श्रृंगार के चार भेद; पूर्वानुराग, मानात्मा, प्रवास और करूण, काम की दश अवस्थाओं अभिलाष–चिन्ता–स्मृति–गुणकीर्तन–उद्वेग– प्रलाप उन्माद–व्याधि–जडत्व और मरण, शृङ्गाराभास, परस्त्रीसङ्गमोपाय मान के तीन भेद; गुरू–मध्य तथा लघु, मानिनी नायिका के मान–मर्दन के छः उपय; साम–दाम–दान–भेद–उपेक्षा–प्रणति और प्रसंग, विभ्रम आदि का बहुत ही सूक्ष्म तथा शास्त्रीय विवेचन प्राप्त होता है। इस उल्लास के अन्तिम भाग में पति के लिए अनुराग पूर्वक तथा अप्रीति पूर्वक प्रयुक्त नामों का उल्लेख किया गया है। तथा सबसे अन्त में प्रवास पिषयक वर्णन है।
चतुर्थ तथा अन्तिम उल्लास में प्रथमतःविप्रलम्भ–शृङ्गार के चतुर्थ भेद; करूण का सलक्षणोदाहरण विवेचन किया है। पुनः प्रतिवेश्मा, नटी, चेटी, कारू, धात्री, शिल्पिनील, वाला और तपस्विनी आदि नायिका की सखियों (सहायिकाओं) के नाम, उनके गण तथा कौतुक, मण्डन, रक्षा, उपालम्भ, प्रसादन, सहयोग और विरह की स्थितियों के आश्वास आदि साखियों के कार्यों का उल्लेख किया गया है। इसी कम में हास्य, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स, अभ्दुत और शान्त–रसों सभेद स्वरूप, उदाहरण और उनके अनुभाव आदि का विवरण, विरोधी–रस, विरोधी–रसों में अन्य रस का समावेश और इन प्रत्येक रसों में पाए जाने वाले भावों का पृथक् पृथक् विवरण प्रस्तुत किया गया है। इस कम में रसाश्रित वृत्तियों; कैशिकी–सात्वती–आरभटी–भारती का निरूपण करते हुए अन्त में काव्य–दूषण, प्रत्यनीक–रस, विरस, दुःसन्धान–रस, नीरस–काव्य, दुष्टपात्र आदि काव्य के सूक्ष्म तथ्यों का निरूपण किया गया है।

ग्रन्थ–रचनाकाल

जैसा कि हम देखेंगे अकबर द्वारा संस्कृत से अनुवाद कराए गए फारसी ग्रन्थ हों या स्वयं फारसी ग्रन्थों के निर्माण, संपादन तथा अनुवाद हों; इन समस्त ग्रन्थों का काल 1567 से 1595 ई॰ के मध्य में ही है अतः अकबरसाहिशृंगारदर्पण के रचनाकाल को भी 1567 से 1569 के बीच ही रखना उचित होगा। यह काल अकबर का यौवन–काल था और यदि भण्डारकर का उद्धरण सत्य हो तो

[10] विशेष विवरण हेतु देखिए– विजयप्रशस्तिमहाकाव्यम्, 9/37–38.

अकबर अपनी जिस सद्योविवाहिता नववधू 'मुद्रावती' से मान किए बैठा था उसे प्रसन्न करने हेतु पद्मसुन्दर गणि ने प्रस्तुत ग्रन्थ श्रृंगारदर्पण का निर्माण किया होगा इस अवधि में अकबर के दाम्पत्य–जीवन पर इन ग्रन्थों से पर्याप्त प्रकाश पड़ता है और हम पाते हैं कि पति–पत्नी के पारस्परिक प्रकृति–सिद्ध प्रणय–कलह, मान–मनौव्वल से महान् मुग़ल सम्राट् अकबर भी बरी नहीं था। हिजरी संवत् 999, ईसवी सन् 1577 में इसी प्रकार सुल्तान वेगम ने भी संस्कृत कथा– ग्रन्थ 'सिहासनद्वातत्रिंशिका' के फारसी अनुवाद ' नामः खिरादअफजा' के खो जाने पर इसे पुनः उपलब्ध कराने हेतु हठ ठान लिया था और अकबर के नाक में दम कर रखा था, जिसका सटीक विवरण बदायूंनी ने अपने इतिहास–ग्रन्थ में विस्तारपूर्वक दिया है। संभव है इससे दश वर्ष पूर्व 1567–68 ई. में, जब अकबर युवक रहा हो और उसकी नवयौवना पत्नी ने किसी अज्ञात कारण पर हठ ठान लिया हो तो पद्मसुन्दर गणि ने प्रणय–कलह को दूर करने के संस्कृत–काव्यशास्त्रियों के पारंपरिक उपाय; जो कि संस्कृत के काव्य और अलंकारशास्त्र में समाहित होते हैं, – के द्वारा अकबर को प्रसन्न करने हेतु इस ग्रन्थ की रचना की हो।

उपर्युक्त संदर्भों के आलोक में यदि इस ग्रन्थ की उपर्युक्त हस्तलिखित प्रति में निर्दिष्ट काल से एक दो वर्ष पूर्व श्रृंगारदर्पण का रचनाकाल स्वीकार कर लिया जाए; जो कि सर्वथा अनुचित नहीं है, – तो अकबरसाहिश्रृंगारदर्पण का विशुद्ध रचनाकाल 1567 से 1569 ईसवी के बीच का कोई काल है।

सन्दर्भ–ग्रन्थ

1. अकबरसाहिश्रृंगारदर्पणम–पद्मसुन्दरगणि प्रकाशक अक्ष्झिल भारतीय मुस्लिम–संस्कृत संरक्षण एवं प्राच्य शोध संस्थान बी. 30/229, नगवाँ लंका, वाराणसी
2. काव्यप्रकाश– मम्मट,व्या॰डॉ॰पारसनाथ द्विवेदी, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 1986
3. काव्यमीमांसा– राजशेख, व्या॰ डॉ॰ गंगासागर राय, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2000
4. नाट्यदर्पण– रामचन्द्र गुणचन्द्र, प्र॰सं॰, डॉ नगेन्द्र, सं॰ डॉ॰ दशरथ ओझा वा आचार्य विश्वेश्वर सिद्धान्त शिरोमणि, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, 1990
5. नाट्यशास्त्र– भरतमुनि (अभिनव भारती टीका सहित) सं॰ डॉ॰ रविशंकर नागर, परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 1989
6. साहित्यदर्पण– विश्वनाथ, व्या॰ शालिग्राम शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 2000
7. सुवृततिलक– क्षेमेन्द्र, व्या॰ ब्रजमोहन झा, चौखम्बा संस्कृत सीरिज ऑफिस, वाराणसी, 1968
8. अलंकारों का ऐतिहासिक विकास– डॉ॰ राजवंश सहाय' हीरा', बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, अकादमी, पदना, 1974
9. अलंकार शास्त्र का इतिहास– डॉ॰ कृष्ण कुमार, साहित्य भंडार, मेरठ, 2003
10. काव्यशास्त्र के परिदृश्य– डॉ॰ सत्येदव चौधरी, परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली,1994
11. रससिद्धान्त– डॉ॰ नगेन्द्र, मयूर पेपर बैक्स, नोएडा, 2001
12. संस्कृत कवि दर्शन– डॉ॰ भोलाशंकर व्यास,चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 1994
13. संस्कृत काव्यशास्त्र का इतिहास– डॉ॰ एस॰ क॰डे॰ अनु॰ मायाराम शर्मा, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 1988
14. संस्कृत काव्यशास्त्र का इतिहास– पी॰वी॰काणे, अनु॰ डॉ॰ इन्द्र चन्द्र शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 2002
15. संस्कृत साहित्य का इतिहास– डॉ॰ उमा शंकर 'ऋषि', चौखम्बा भारती अकादमी, वाराणसी, 1999
16. संस्कृत साहित्य का प्रामाणिक इतिहास– डॉ॰ रमाशंकर त्रिपाठी, कृष्णदास अकादमी, वाराणसी, 1996
17. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास– डॉ॰ कपिल देव द्विवेदी, रामानारायण लाल विजय कमार, इलाहाबाद, 2000